Vol.11 March18 No.8
Annual Subscription : Rs 100
Rs. 10/- per copy

ब्रह्मार्पण
BRAHMARPAN

वेदोऽखिलो
धर्ममूलम्

A Monthly publication of
Brahmasha India Vedic
Research Foundation

Brahmasha India Vedic Research Foundation
ब्रह्माशा इंडिया वैदिक रिसर्च फाउन्डेशन

दोहे

–नरेन्द्र आहूजा विवेक

ईश मेरे में बह चलूँ, तुझ अनन्त की ओर।
इस चातक की मिट सके, प्यास तेरे ठौर।।
तू तो मेरे निकट है, पर मैं तुझसे दूर।
मैं मूरख समझूँ नहीं, समझाता भरपूर।।

अपनी किस्मत के लिये, काहे कोसें तोय।
जैसे जिसके करम हैं, वैसे ही फल होय।।
करमों का जो फल मिले, वह किस्मत कहलाय।
जब हों करम लेखनी, क्यों पढ़कर पछताय।।

मैं और मेरा ईश्वर, दोनों भीतर साथ।
मैं भटकता बाहर फिरूँ, छोड़े उसका हाथ।।
भीतर बैठा देखता, हर पल ही समझाय।
पर मन स्वार्थ से भरा, कुछ समझ नहीं पाय।।

कर्म तेरे ही ले चलें, तुझे मंजिल की ओर।
दशा, दिशा पहचान चल, पावे अपना ठौर।।
विचारों से शब्द बनें, शब्द करम बन जाय।
सोच अपनी सुधार ले, करम सुधर तब पाय।।

मन में स्वार्थ भाव हो, करम अधम बन जाय।
पर उपकार अगर करो, गति उत्तम कहलाय।।
प्रेम सेवा से करो, चलो ईश ओर।
कार्य नफरत के करो, कभी मिले ना ठौर।।

602ए जी–53, सैक्टर–20,
पंचकूला (हरियाणा)

Brahmarpan March'18 Vol. 11 No.8
फाल्गुन-चैत्र 2074 वि.संवत्

ब्रह्मार्पण
BRAHMARPAN

A bilingual Publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION

C2A/58, Janakpuri,
New Delhi-110058
Tel :- 25525128, 9313749812
email:deeukhal@yahoo.co.uk
brahmasha@gmail.com
Website : www.thearyasamaj.org
of Delhi Arya Pratinidhi Sabha

Sh. B.D. Ukhul
Secretary
Dr. B.B. Vidyalankar 0124-4948597
President
Col.(Dr.) Dalmir Singh (Retd.)
V.President
Dr. Mahendra Gupta *V.President*
Ms. Deepti Malhotra
Treasurer

Editorial Board
Dr. Bharat Bhushan Vidyalankar, Editor
Dr. Harish Chandra
Dr. Mahendra Gupta
Sh. Shiv Kumar Madan

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र दिल्ली ही होगा।

Printed & Published by
B.D. Ukhul for Brahmasha India Vedic Research Foundation
Under D.C.P.
License No. F2 (B-39) Press/ 2007
R.N.I. Reg. No. DELBIL/ 2007/22062
Price : Rs. 10.00 per copy
Annual Subscription : Rs. 100.00

CONTENTS

1. दोहे
   –नरेन्द्र आहूजा विवेक 2
2. संपादकीय 4
3. सांख्य दर्शन 7
   –डॉ. भारत भूषण
4. मनुर्भव
   –धर्मवीर सेठी 9
5. पुराने शस्त्रों से नई लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती 13
   –न्यायमूर्ति चन्द्रशेखर धर्माधिकारी
6. महर्षि दयानन्द विनोदप्रिय भी थे
   –खुशहाल चन्द्र आर्य 16
7. इतिहास के स्वरूप–विषयक भारतीय दृष्टि 20
   –स्व. स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
8. खतरे में देश की अखण्डता 25
   –शिवकुमार गोयल
9. Vivekanand:AUniversal Teacher 34
   -Satish Kumar

संपादकीय

देश पर लगा जातपाँत का घुन

–भारत भूषण विद्यालंकार

मनुस्मति में लिखा है "जन्मना जायते शूद्रः, संस्काराद द्विज उच्यते" अर्थात् जन्म से सभी शूद्र पैदा होते हैं परन्तु शिक्षा आदि के संस्कारों से वे 'द्विज' कहलाते हैं। ऐसी स्थिति में उनमें ऊँच-नीच का भेदभाव क्यों हो?

प्राचीन वैदिक व्यवस्था में चार वर्णों का विधान किया गया था। जो अध्ययन-अध्यापन करते थे (अर्थात बुद्धिजीवी वर्ग) ब्राह्मण कहलाता था। जो लोग देश की आन्तरिक और बाह्य सुरक्षा में संलग्न थे तथा प्रशासन और कानून-व्यवस्था को देखते थे वे क्षत्रिय जाने जाते थे। कृषि, व्यापार, उद्योगों के द्वारा धन कमाने वाला वर्ग वैश्य कहलाता था। इसके अतिरिक्त जो लोग शिक्षा के अभाव में अपने भरोसे कुछ करने में समर्थ नहीं होते थे वे समाज के अन्य वर्गों की सेवा करके व मेहनत, मजदूरी करके और उसके बदले वेतन पाकर जीवन निर्वाह करते थे वे शूद्र कहलाते थे। चाहे हम इन वर्गों को कोई भी नाम दें प्रत्येक समाज में ये चार वर्ग अवश्य होते हैं। इस प्रकार वर्णों की यह व्यवस्था जन्म से नहीं होती जैसा हम आज के समाज में देखते हैं।

समाज में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में कौन ऊँचा है और कौन नीचा? यह संघर्ष आदि काल से चला आ रहा है। राम और परशुराम, विश्वामित्र और वसिष्ठ में संघर्ष का कारण ब्राह्मण और क्षत्रिय की परस्पर प्रतिस्पर्धा ही थी। आज पूँजीवाद के उत्कर्ष के कारण वैश्य इन दोनों से ऊँचे बन बैठे हैं। साथ ही वर्तमान युग में काम का महत्त्व बढ़ गया है इसलिए शूद्रों का बढ़ गया है।

प्राचीन समाज में वर्ण व्यवस्था गुण, कर्म और स्वभाव पर आधारित थी परन्तु धीरे-धीरे वह जन्म पर आधारित हो गई। पहले विद्याव्यसनी, मेधावी, अध्यापक, शोधार्थी, त्यागी, तपस्वी व्यक्ति ब्राह्मण होता था। सैनिक, योद्धा, निर्बलों का रक्षक, शासन-कुशल व्यक्ति क्षत्रिय होता था। व्यापारी, उद्योगपति, जमींदार, कृषिकर्मी व्यक्ति वैश्य कहलाता था। आज के युग में अधिकांश लोगों का जीवन धनोपार्जन में लगा है। सभी पैसे के पीछे दौड़ रहे हैं। अतः सभी वैश्य हैं। हमारी प्राचीन वर्ण-व्यवस्था में इस बात की भी संभावना थी कि कोई व्यक्ति ब्राह्मण के घर में जन्म लेकर यदि वह शिक्षा ग्रहण नहीं करता है तो वह शूद्र कहा जाता था इसके विपरीत यदि कोई शूद्र व्यक्ति उच्च शिक्षा प्राप्त कर लेता था तो वह ब्राह्मण बन सकता था। वेद में कहा है-

"शूद्रो ब्राह्मणतामेति, ब्राह्मणश्चेति शूद्रताम्"

हमारे समाज में जहाँ पहले गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार चार ही वर्ण थे। आज हमारा समाज सैकड़ों जातियों और उपजातियों में बँट गया है। अग्रवाल, बंसल, कंसल, कायस्थ, माथुर, श्रीवास्तव, राजपूत, खत्री, अरोड़ा, सैनी, जाट, यादव, जाटव, गूजर, कुर्मी आदि जातियाँ हैं और इधर पेशों के आधार पर धोबी, नाई, तेली, चमार, सुनार, लोहार, कहार, आदि जातियाँ चल पड़ी हैं। इसमें भी कोई आश्चर्य नहीं कि कुछ जातियाँ स्वयं को दूसरों से उच्च मानती हैं तो कुछ को नीचा समझा जाता है। निस्संदेह, इसमें आर्थिक हीनता ही मुख्य कारण है।

इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि स्वयं को ऊँचा समझने वाले लोगों ने कुछ अन्य को अछूत, दलित करार दिया। उनसे रोटी-बेटी का संबंध तो दूर उनका स्पर्श तक वर्जित कर दिया गया। देश के कई क्षेत्रों में अछूत लोगों को घोर अपमान तथा दुर्दशा में जीवन बिताना पड़ता है। मध्यकाल

में और ब्रिटिश शासन में जातियों के भेदभाव और ऊँच-नीच की भावना काफी प्रबल हो गई।

जातपाँत राष्ट्र की एकता के लिए घातक

जातपाँत को राष्ट्र की एकता के लिए घातक मानकर उसे समाप्त करने के अनेक प्रयास किए गए। जातपाँत तोड़कर विवाह करने को प्रोत्साहन दिया गया। समाजवादी विचारधारा से प्रभावित होकर देश में वर्गहीन समाज की स्थापना का उद्देश्य सामने रखा गया, दूसरी ओर स्वतंत्रता पाने के लिए कटिबद्ध देशवासियों की एकता को खंडित करने के लिए अंग्रेज सरकार ने पहले तो मुसलमानों को अलग मताधिकार दिया। उसके बाद उसने दलितवर्ग हिन्दुओं को भी पृथक मताधिकार देने का प्रस्ताव किया। इसके लिए डॉ. आम्बेडकर को आगे बढ़ाया गया। गाँधी जी ने हिन्दुओं में फूट डालने के उद्देश्य से दिए गए सरकार के साम्प्रदायिक पंच निर्णय के विरोध में 21 दिन का अनशन किया। हरिजनों को अलग मताधिकार देने का निश्चय तो उससे टल गया परन्तु अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों का अलग परिगणना करके उनके लिए चुनाव की विशेष व्यवस्था की गई। इन सीटों पर केवल अनुसूचित जातियों या जनजातियों के उम्मीदवार ही चुने जा सकते थे।

आरक्षण का विशेष प्रावधान

आजादी के बाद डॉ. आम्बेडकर ने संविधान में अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिए दस वर्ष तक विशेष आरक्षण का प्रावधान किया। वोट की राजनीति के कारण वह आरक्षण 70 वर्ष पूरे होने के बाद भी बना हुआ है और कोई आशा नहीं कि वह कभी समाप्त भी होगा या नहीं अब तो और वर्गों ने भी आरक्षण की माँग करनी शुरु कर दी है। उस सरदार पटेल ने आरक्षण का विरोध भी किया था, जिसे आम्बेडकर ने स्वीकार नहीं किया।

जातपाँत, छुआछूत के विरुद्ध आर्यसमाज के प्रयास

जातपाँत, छुआछूत राष्ट्र की एकता के लिए हानिकारक हैं इस बात को आर्यसमाज ने अनुभव किया। स्वामी श्रद्धानंद जी ने जो उस समय काँग्रेस के भी प्रमुख नेता थे गाँधी जी से अछूतोद्धार के कार्य को अपने हाथ में लेने का आग्रह किया। मौ. मुहम्मद अली और मौ. शौकत अली तब गाँधीजी के दाएँ और बाएँ हाथ बने हुए थे। उनकी इच्छा थी कि आठ करोड़ अछूत कहे जाने वाले हिन्दुओं को मुसलमान और ईसाई आधा-आधा बाँट लें। इस विषय में गांधीजी ने कहा कि काँग्रेस राजनीतिक संस्था है, उसे धार्मिक मामलों में दखल नहीं देना चाहिए। अतः जब काँग्रेस ने बहुत समय तक स्वामी श्रद्धानन्द जी के बार-बार कहने पर भी अछूतोद्धार कार्यक्रम को हाथ में नहीं लिया तो खिन्न होकर स्वामी जी काँग्रेस से अलग हो गए। कई वर्ष बाद काँग्रेस ने हरिजनों के मंदिर में प्रवेश का आंदोलन चलाया।

गुरुकुलों में जातपाँत नहीं

गुरुकुलों ने जातपाँत को मिटाने की दिशा में क्रांतिकारी कार्य किया। वहाँ छात्रों को उनकी जाति बताई ही नहीं जाती थी। किसी को पता भी हो तो कहीं उसकी चर्चा नहीं होती थी। स्नातक प्रमाण-पत्र में भी उसका उल्लेख नहीं होता था। क्या ही अच्छा होता कि यह प्रथा सारे देश में लागू होती। यहाँ एक बात का उल्लेख किया जा रहा है कि एक समय था जब वहाँ रसोइया एक चर्मकार (चमार) था और उसका पुत्र गुरुकुल का विद्यार्थी था। जिसके साथ किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाता था। देश में अछूतों से भेदभाव मिटाने के लिए निश्चय ही यह अनुकरणीय है।

****

सांख्य दर्शन (अध्याय-1, सूत्र-122)

-डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार

केवल एक व्यक्तिरूप आत्मा है, इस विचार में सूत्रकार निम्नलिखित सूत्र में एक और युक्ति प्रस्तुत करते हैं; सूत्र है-

वामदेवादिर्मुक्तो।।122।।

अर्थ- (वामदेवादिः) वामदेव आदि (मुक्तः) मोक्ष को प्राप्त हो चुके हैं, अतः (अद्वैतम्) अद्वैत-एक ही आत्मा (न) नहीं है।

भावार्थ- यह बात सुनिश्चित है कि वामदेव आदि आत्मदर्शी ऋषि मोक्ष को प्राप्त हो चुके हैं। यदि आत्मा एक होता तो आज कोई भी बन्धन में न दिखता और यह वर्तमान संसार का क्रम भी न दिखाई देता। एक आत्मा के मुक्त होने पर सारा संसार चक्र उसी रूप में चल रहा है। इससे यह स्पष्ट परिणाम निकलता है कि आत्मा अद्वैत अर्थात् एक नहीं है अनेक हैं।

दी हिबिस्कस,

बिल्डिंग-5, एपार्ट नं.-9बी

सेक्टर-50, गुड़गाँव (हरियाणा) 122009

फोन-0124-4948597

BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION ACKNOWLEDGES WITH THANKS RECEIPT OF THE FOLLOWING DONATIONS:-

1. Dr. O. P. Rustogi, B-19, Shankar Garden, New Delhi-110018 ₹ 500/-
2. Shri M.L. Kalra, A2/157, Janakpuri, New Delhi-110058 ₹ 500/-

Donations to the Foundation are eligible for Tax Exemption under Section 80G of the Income Tax Act 1960 Vide No.DIT(E)1/3313/DELBE 21670-2503210 dated 25.03.2010

मनुर्भव

-धर्मवीर सेठी

ऋग्वेद की ऋचा कहती है :

ओ३म् तन्तुं तन्वन्नजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान्।
अनुल्वणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।।

ऋ. 10-53-6

इस सारगर्भित एवं पवित्र मंत्र में परमात्मा अपनी सन्तानों - आत्माओं - को एक ही सन्देश देते हैं-'मनुर्भव' मनुष्य बनो। 'इन्सान बनो कर लो भलाई का कोई काम, इन्सान बनो' और उसके लिए उपाय भी बता दिये। **प्रथम उपाय** है 'तन्तुं तन्वन्नजसो भानुमन्विहि' अर्थात् कर्म के ताने-बाने बुनते हुए मुँह सदा परमात्मा रूपी सूर्य के सम्मुख रखो। अर्थात् उसकी आज्ञा का निःस्वार्थ भाव से पालन करो। कबीर जुलाहे थे। इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना के ताने-बाने से वह शरीर रूपी चादर बुनते थे और उन्होंने क्या किया। - 'दास कबीर जतन ते ओढ़ी, ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया'। बेदाग, निष्कलंक। दूसरा उपाय है 'ज्योतिष्मतः पथो रक्ष' अर्थात् संसार में आगे बढ़ने के लिए ऋषियों, मुनियों द्वारा बुद्धिमत्ता से जो ज्योतिर्मय मार्ग बनाए गये हैं उन मार्गों पर चलो और उनकी रक्षा करो। एक समय ऐसा भी था जब 'लुप्त हुए सद्ग्रन्थ'-जब भारत के जन-मानस ने वेद-विहित मार्गों का अनुसरण छोड़ दिया तो वे अन्ध-विश्वासों की घास में विलीन हो गए। जिन्हें मानवता के उत्थान के लिए महर्षि दयानन्द सरीखे तपस्वियों ने पुनः खोज निकाला।

तीसरा उपाय है 'धिया कृतान्' अर्थात अपनी सद्बुद्धि से प्रेरित हो तुम ऐसे काम करो कि जिससे तुम्हारी कीर्ति बढ़े

और अन्त में <u>चौथा उपाय</u> बताते हुए वेद-भगवान कहते हैं 'अनुल्वणं वयत जोगुवामपो' अर्थात् दूसरों को शिक्षा देने से पूर्व पहले तुम स्वयं एक आदर्श स्थापित करो ताकि आगे चलकर समाज तुम्हारा अनुगमन कर सके। तभी हम सच्चे अर्थों में मनुष्य बन पाएँगे और परमात्मा की आदर्श सन्तान भी।

सच्चा इन्सान बनने की ललक एक गीत में दुहराई गई है- 'न हिन्दू बनूँगा न मुसलमान बनूँगा इन्सान की औलाद हूँ इंसान बनूँगा'। यह 'इन्सान' बने रहना ही संस्कारों का प्रतिफल है। जो प्राप्त होता है माँ से। माँ की चर्चा होते ही गृहस्थाश्रम का बोध होने लगता है और वहीं से आरम्भ होता परिवार।

वेद की उक्ति है - 'जीवेम् शरदः शतम्' (यजु.36/24) अर्थात् हे मानव! तुम सौ वर्ष पर्यन्त पूर्ण रूपेण सुखपूर्वक जियो और इस दीर्घ अवधि को बड़े वैज्ञानिक ढंग से समान रूप से चार आश्रमों में बाँटा गया है- ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास। ब्रह्मचर्य में विद्या और ऊर्जा ग्रहण करो, गृहस्थ में परिवार की वृद्धि, वानप्रस्थ में धर्मानुसार मार्गदर्शन और संन्यस्त होने पर आशीर्वाद का हाथ उठता है-

न सा सभा यत्र सन्ति न वृद्धा,
वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम्।
नासौ धर्मो यत्र न सत्यमस्ति,
न तत सत्यं यच्छलेनाभ्युपेतम्।। महाभारत

और यह गृहाश्रम ही तो परिवार को संस्कार प्रदान करने का केन्द्र बिन्दु है और चारों में श्रेष्ठ भी। मनुस्मति के अनुसारः

यथा नदीनदाः सर्वे सागरे यान्ति संस्थितिम्।
तथैवाश्रमिणः सर्वे गृहस्थे यान्ति संस्थितिम्।।

अर्थात्! जैसे सब बड़े-बड़े नद और नदी सागर में जाकर

स्थिर होते हैं, वैसे ही सब आश्रमी गृहस्थ ही को प्राप्त होकर स्थित होते हैं।

अब जब गृहस्थ अर्थात् परिवार की संरचना का इतना अधिक महत्त्व वेद और स्मृति में बखान किया गया है तो उस परिवार में माँ का स्थान सर्वोपरि माना गया है। 'माता निर्माता भवति' - माँ निर्माण करती है क्या केवल सन्तान का। नहीं संस्कारित सन्तान का। निर्माण यात्रा में कितने अवरोध, कितने कष्ट उसे झेलने पड़ते हैं। वह चुपचाप झेल लेती है, सह लेती है। वह स्रोत है सर्जन और समर्पण का, अपूर्व सुख का। उस सुख की तुलना में संसार-भर की सम्पदाएँ, सुविधाएँ नगण्य हैं। पुत्र का पालन करते हुए वह वंश-परंपरा को ही आगे नहीं बढ़ाती, सम्पूर्ण संस्कृति की सेवा करती है। एक विचारक के अनुसार यदि तारे आकाश की कविता है तो नारी धरती की। वह सृजन की चेतना है। संस्कार निर्माण उसकी महानता का दायित्व है। सफल माँ वही होती है जो सन्तान को संस्कारी बनाती है, चरित्रवान बनाती है। चरित्र सम्पन्न व्यक्ति ही समाज और राष्ट्र को गरिमा प्रदान करते हैं क्योंकि चरित्र जीवन में शासन करने वाला तत्त्व है और प्रतिभा से भी ऊपर। 'Character is the governing element of life and is above genius' और चरित्रवान बनने के लिए अनुशासन, विनम्रता, ईमानदारी और परोपकार की महती आवश्यकता है। असाधारण होती हैं वे माताएँ जो बच्चों का ठीक समय पर सही मार्ग दर्शन करती हैं।

महान् माता ही महान् आत्मा का आह्वान कर सकती है। कहा जाता है कि बालक माँ के पेट से ही सीखने लगता है। नेपोलियन, अभिमन्यु, वीर शिवाजी सरीखे कतिपय उदाहरण

इस तथ्य की पुष्टि करते हैं। माँ की जैसे वृत्तियाँ, भावनाएँ और सुझाव होते हैं, वैसा ही शिशु का निर्माण होता है। उत्तम सन्तान संस्कारों से ही बनती है। सम्भवतः इसी कारण महर्षि दयानन्द ने 'संस्कार विधि' के रूप में एक अद्भुत कृति की रचना की जिसमें मानव के सम्पूर्ण जीवन के सोलह संस्कारों की विशद व्याख्या है-

गर्भाद्या मृत्युपर्य्यन्ताः संस्काराः षोडशैव हि

ज्ञातव्य है कि प्रथम तीन संस्कार तो शिशु के जन्म से पूर्व के ही हैं- बस यहीं से 'संस्कारित सन्तति' के निर्माण का मंगलमय आरम्भ होता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती के शब्दों में "शरीर और आत्मा सुसंस्कृत होने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्त हो सकते हैं और सन्तान अत्यन्त योग्य होती हैं, इसलिए संस्कारों का कराना सब मनुष्यों को अति उचित है"।

अस्तु! हे गृहस्थ-कुल में जन्मे विद्वान्! तू सन्तति-क्रम का विस्तार करता हुआ ज्ञान के प्रकाशक प्रभु का अनुगमन कर और बुद्धि से तू उनके बनाए गए मार्गों को प्रकाश से युक्त रख। उपदेष्टा जनों के कभी नष्ट न होने वाले सत्कर्म को कर। तू सदैव मननशील हो और दिव्य गुण वाला पुत्र व शिष्य तैयार कर।

परिवार में संस्कार की उदात्त स्थिति को बनाए रखने के लिए इतना ही कहना चाहूँगा कि घर की केन्द्र होती है माँ। उसके कोमल, सुघड़ हाथों के संस्पर्श से घर की हर वस्तु संगीतमय हो सकती है जब वह स्वयं संगीतमय हो, उसका जीवन लयबद्ध हो, सजग हो।

वरेण्यम, ए-1055, सुशान्त लोक-1,
गुरुग्राम-122009 (हरियाणा)

पुराने शस्त्रों से नई लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती

–न्यायमूर्ति चन्द्रशेखर धर्माधिकारी

सत्तर साल में कुछ नहीं हुआ, यह कहना गलत है, लेकिन सम्पूर्ण आजादी मिली, यह कहने की भी हिम्मत नहीं होती। आजादी का मतलब सिर्फ अंग्रेजी राज से मुक्ति नहीं, स्वराज भी अभिप्रेत था। स्वराज की प्यास सुराज से नहीं बुझ सकती। यह सच है, लेकिन सुराज के बिना स्वराज प्रतिभूत नहीं होता। आजादी जैसी राजनीतिक चाहिए, वैसी ही आर्थिक और सामाजिक भी चाहिए थी; और आर्थिक और सामाजिक आजादी मिली, यह कहना सम्भव नहीं है। जैसे आजादी के बाद झंडा, राष्ट्रगीत बदले, वैसे ही शिक्षा प्रणाली, न्यायप्रणाली और राष्ट्रभाषा में भी बदलाव आना जरूरी था। स्वदेशी कोरी वस्तु नहीं है, भावना है। यह भावना अगर नहीं जगी तो स्वराज का मतलब नहीं। आज की शिक्षा का माध्यम स्वदेशी नहीं है, भावना स्वदेशी नहीं है, फिर सामान्य आदमी स्वराज आया, यह कैसे माने?"

सुराज कैसे आयेगा?

अंग्रेजों के राज में देश पराधीन था और देहात भी पराधीन थे। आज पराधीन देहातों का स्वाधीन देश है। गाँव और गाँववाले पराधीन होकर स्वाधीनता की स्वर्ण जयन्ती कैसे मनाएँगे? सामान्य नागरिक का सम्मान वोट द्वारा होता है। अगर यह वोट जाति या धर्म के नाम पर हड़पा गया, पैसों से खरीदा गया, तो उसका महत्त्व ही छिन जाता है। बच्चे भूखों मरते हैं, गरीबी है, इसलिए हर महिला सतीत्व बेच पेट नहीं पालती। सुराज में सामान्य नागरिक का वोट सतीत्व है; वह अगर बाजार में बिकेगा या लुटेगा, तो सुराज कहाँ से आएगा?

स्वराज्य के तीन शत्रु

आजादी और स्वराज्य के तीन दुश्मन हैं- जातिवाद, जमातवाद और बहुराज्यवाद। हमारे संविधान में नागरिकता तो एक ही मान्य है जो भारतीय हैं लेकिन जाति, धर्म और जमात के नाम पर अगर नागरिकता पनपेगी या कलुषित होगी, तो भारतीयता ही नहीं होगी। सिर्फ 'वंदेमातरम्' कहने से नहीं होगी। 'वंदे मातरम' भी कहना होता है। भ्रातृत्व भावना हिंदवी स्वराज की बुनियाद थी। हम तो ऐसा स्वराज चाहते थे जिसमें

कोई किसी को लूटेगा नहीं; थैली या डंडे का राज न हो; थैली या गुंडे से डर कर कोई जियेगा नहीं। स्वराज का मतलब है प्रतिष्ठित जीवन, जहाँ सामान्य नागरिक की प्रतिष्ठा हो। आज यह ठीक है कि सम्पत्ति बढ़ी, उत्पादन भी बढ़ा, लेकिन साथ-साथ सुख-लोलुपता, आराम और बेदरकारी की भावना भी बढ़ी। सुख के चोंचले भी बढ़े, स्टैंडर्ड ऑफ स्पेंडिंग-स्टैंडर्ड आफ लिविंग नहीं होता। खर्च करने की शक्ति बढ़ी, लेकिन कुछ लोगों की, और उतनी गरीबी भी बढ़ी।

अर्थशास्त्र अनर्थशास्त्र

आज का अर्थशास्त्र अनर्थशास्त्र है, स्वार्थशास्त्र है और विपत्तिशास्त्र है। जहाँ समान वितरण की व्यवस्था नहीं हो और केन्द्रीभूत अर्थरचना होती है, वहाँ हॉर्सपॉवर की फिकर होती है, मैन पावर की नहीं। जब तक भ्रष्टाचार की प्रतिष्ठा समाप्त नहीं होगी, तब तक स्वतंत्रता प्राणभूत नहीं हो सकती। हमारा अन्तिम ध्येय जनता को आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक गुलामी से मुक्त रखना है जिसमें सबको विकास के अवसर मिलें और शोषणमुक्त समाज हो। जहाँ किसी भी प्रकार का शोषण होगा, वहाँ स्वराज हो ही नहीं सकता। आज दुर्भाग्यवश एक ओर निष्क्रिय सज्जन हैं और दोनों के बीच एक तरफ पुलिस का डंडा है, दूसरी तरफ गुंडों की लाठियाँ। इन दोनों के बीच सामान्य जीवन का सुराज खो गया है। स्वराज का 'स्व' अगर खो गया, तो स्वत्व और सत्व दोनों खत्म हो जाते हैं, फिर बचता है राज!

त्याग के बिना आजादी नहीं पनपेगी

आज भी ऐसे लोग हैं, जो कहते हैं- अंग्रेजों का राज अच्छा था। जो आराम के लिए आजादी का और सुख के लिए स्वतंत्रता का सौदा करना चाहते हैं, वे देशवासी कभी आजाद नहीं होते। खलील जिब्रान ने लिखा है, जिस देश के लोग अपने देश में उगा हुआ अन्न नहीं खाते, उनकी नग्नता कभी नहीं छिपती; और जिस देश के कई टुकड़े होने के बाद भी हर टुकड़ा अपने आपको स्वतंत्र राष्ट्र मानता है, उस देश सरीखा अनुकंपनीय कोई राष्ट्र नहीं। शायद जिब्रान ने भारत के लिए ही कहा था। संस्कृति दो ही होती हैं- एक त्याग पर आधारित, एक भोग पर आधारित। द्रौपदी का वस्त्रहरण खत्म ही नहीं हो रहा। स्त्री नागरिक बनी, लेकिन मनुष्य नहीं बनी,

देवता बनी, फिर भी वह निम्न प्रकार की ही मानव मानी गई, जहाँ स्त्री की प्रतिष्ठा नहीं या पैसे के भरोसे या डंडे के भरोसे प्रतिष्ठा नापी जाती है। शोषण के खिलाफ बोलने वाले बहुत हैं, लेकिन शोषण करने वालों के खिलाफ शोषितों की तरफ से लड़ने वाला कोई दिखता ही नहीं। दो सौ साल की गुलामी ने हमें शोषण सहन करने की आदत डाल दी है और स्वराज्य का मतलब तो यही है कि शोषणमुक्त समाज हो।

छोटे लोगों की बड़ी छाया

कार्लाइल का वाक्य है कि 'जब छोटे, ठिगने लोगों की बड़ी-बड़ी छाया पड़ने लगे तब समझ लेना चाहिए कि सूर्यास्त नजदीक है।' आज इस देश में एक भी नेता ऐसा नहीं है जो समूचे देश का नेता हो; जिसके पीछे धर्म, जाति या भाषा न चिपकाई जा सकती हो। हम आज विधानसभा में जिला परिषद के नाप के होते हैं और संसद में अपने प्रदेश के ऊपर नहीं उठते। लोकप्रतिनिधि सारे भारत का भूगोल भी नहीं जानते, लोगों का मानस क्या जानेगे? सीमाओं के झगड़े, नदियों के पानी के झगड़े, इनका स्वरूप प्रादेशिक न रहकर समूचे भारत के हित की दृष्टि से देखा जायेगा, सोचा जायेगा। आज दुर्भाग्यवश एक ही राजनीतिक पार्टी के सदस्य और नेता कर्नाटक और तमिलनाडु में रहते हैं और कावेरी नदी के पानी के प्रश्न पर एक-दूसरे का सिर काटने को तैयार हैं। कावेरी का पानी समंदर में बह गया, हर्ज नहीं; लेकिन तमिलनाडु या कर्नाटक को अधिक मात्रा में मिला, तो ये नेता यह नहीं सह सकते। ये सारे लोग बाजार में नीलामी बोलने के लिए खड़े हुए दलाल हैं। यह प्रादेशिकता हमारे स्वराज को खत्म कर देगी। यह भाषावाद नहीं, भाषा वार है, भाषिक युद्ध और आपसी युद्धों में भारत की स्वतंत्रता की भी बोली हो जायेगी, ऐसा डर लगता है। अंग्रेजों से लड़ना आसान था, क्योंकि वे पराये थे। अपनों, स्वार्थियों से लड़ना ज्यादा मुश्किल है और दुर्भाग्यवश आज हम इसी मुकाम पर आ पहुँचे हैं। पुराने शस्त्रों से नई लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती। स्वार्थों का हिसाब करके 21वीं सदी में नहीं जाया जा सकता। उसके लिए औजार भी नये, भावना भी नई होनी चाहिए और अगर हम यह नहीं करते, तो कैलेंडर के साल बदलते जाएँगे, लेकिन परिवर्तन नहीं आयेगा।

महर्षि दयानन्द विनोदप्रिय भी थे

-खुशहाल चन्द्र आर्य

महर्षि दयानन्द इतने बड़े त्यागी, तपस्वी संन्यासी होकर केवल गम्भीर ही नहीं थे बल्कि सभी रसों से परिपूर्ण थे। वे असहाय व निर्बल को देखकर करुणा भाव से भर जाते थे। देश की या किसी व्यक्ति की दयनीय दशा देखकर रात भर रोते थे। किसी दृष्टि या पापी को दण्ड देने के लिए क्रोधित इतने अधिक होते थे, उनको देखकर दुष्ट डर के मारे भयभीत होकर उनके पैरों में पड़कर क्षमा माँगते थे। उनका कण्ठ भी बड़ा मधुर था। मंत्रों को जब सस्वर बोलते थे या भजन गाते थे तो लोग झूमने लग जाते थे। इन सभी रसों का दिग्दर्शन उनके जीवन में पग-पग पर होता है। अन्य रसों के साथ-साथ उन्हें मनोरंजन करना भी प्रिय लगता था। यहाँ उनके जीवन की कुछ घटनाएँ लिख रहे हैं जिनसे उनके विनोदी स्वभाव का दिग्दर्शन होता है। वे इस प्रकार हैं-

1. यह घटना सन 1867 की चासी ग्राम की है। पाण्डेय गंगा प्रसाद जी स्वामी जी के एक श्रद्धालु अनुयायी थे। जिस प्रकार स्वामी जी जाटों को, राजपूतों को, बनियों को यज्ञोपवीत देते थे, उनका अनुकरण करके गंगा प्रसाद जी भी उसी प्रकार गाँव-गाँव में विचरण करते हुए जनेऊ धारण कराते थे। उनके इस कार्य से स्वामी जी बहुत प्रसन्न थे। एक दिन, गंगा प्रसाद जी ने स्वामी-चरणों में उपस्थित होकर निवेदन किया कि महाराज! मैंने बहुत बड़ी जन-संख्या को जनेऊ धारण कराए हैं। स्वामी जी ने विनोद भाव से हँसते हुए कहा कि यज्ञोपवीत देते ही हो या किसी का उतारते भी हो? उसने विनती की-भगवन! कभी जनेऊ उतारा भी जाता है? स्वामी जी ने कहा- हाँ, जो जन धर्म-कर्म हीन हो जाए उसके उपवीत (जनेऊ) उतार लेने चाहिए।

2. उसी गाँव की घटना है कि पण्डित गंगा प्रसाद का गुरु प्रायः स्वामी जी के पास आया जाया करता था। एक दिन

वह स्वामी जी की कुटिया पर अपने वस्त्र रख, गंगा तीर पर स्नानार्थ जाने लगा। स्वामी जी ने विस्मय से पूछा कि आपकी भुजा में क्या है? वह बोला महाराज, यह "अनन्त" है। स्वामी जी झट उसके पास चले गए और उंगलियों से नापकर कहने लगे कि यह तो इतने अंगुल का है, अनन्त कहाँ है? उसने लज्जा के मारे यह अनन्त तुरन्त उतारकर गंगा में बहा दिया।

3. स्वामी जी चासी के अनूपशहर पधारे। वहाँ ठाकुर गिरवर सिंह चंदौख-निवासी स्वामी जी की सेवा में आए। उस समय उनके पास नर्मदा से मँगवाये हुए गोल पिण्ड भी थे। वे उनका प्रतिदिन पूजन किया करते थे। ठाकुर महाशय ने स्वामी जी से पूछा कि क्या शिव पूजा अच्छी है? स्वामी जी ने उत्तर दिया कि इससे तो चींटियों की पूजा करना अच्छा है। क्योंकि जो नैवेद्य उस पर चढ़ाया जाता है। उसे यह बटिया तो नहीं खा सकती परन्तु चींटियों पर चढ़ाओगे तो वे अवश्य खा लेंगी।

4. स्वामी जी महाराज पौष सुदी 6 सं० 1930 तदनुसार सन् 1873 को अलीगढ़ आए और राजा जयकृष्ण जी के अतिथि बने। महाराज का शुभागमन सुनकर सहस्त्रों नगर निवासी तथा आस-पास के गाँव के लोग उपदेश सुनने आने लगे। सारे नगर में स्वामी जी के प्रचार का प्रभाव था। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई सभी सत्संग में आते थे। व्याख्यान के पश्चात् शंका-समाधान भी होता था। उसमें रात के दस बज जाया करते थे। स्वामी जी के इस अथक परिश्रम की सभी प्रशंसा करते थे। एक दिन, एक पण्डित मंदिर में चबूतरे के ऊँचे स्थान पर बैठकर स्वामी जी से शास्त्रार्थ करने लगा। लोगों ने उसके ऊँचे स्थान पर बैठने को बुरा समझा। कई भद्र पुरुषों ने उसे समझाया कि सभ्य पुरुषों की तरह बैठकर वार्तालाप करो, परन्तु वह ऐसा हठीला था कि वहीं डटा रहा। स्वामी जी ने लोगों से कहा कि कोई हानि नहीं, पण्डित जी वहीं बैठे रहें। केवल ऊँचे आसन से किसी को महत्त्व प्राप्त नहीं होता।

यदि ऊँचा आसन बड़ाई के कारण से हो तो पण्डित जी से भी ऊँचे वृक्ष पर कौआ बैठा है।

5.सन् 1879 में स्वामी जी कानपुर होते हुए दानपुर पहुँचे। वहाँ स्वामी जी से एक पुरुष ने प्रार्थना की, "महाराज! अभ्यास में मन लगाने का बहुत ही यत्न करता हूँ, परन्तु मन नहीं लगता। इसके संकल्प-विकल्प शान्त ही नहीं होते।

स्वामी जी ने व्यंग्य तथा विनोद भाव से कहा कि यदि मन नहीं टिकता तो भाँग भवानी का एक लोटा और चढ़ा लिया करो।

यह उत्तर सुनकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। वह मन ही मन कहने लगा, कि स्वामी जी को तो पता भी नहीं है कि मैं भाँग पीता हूँ। फिर यह कैसे जान गए? सच है सत्पुरुषों के सामर्थ्य की कोई सीमा नहीं होती। उनका माहात्म्य अगम्य हुआ करता है। इसी प्रकार एक दिन एक अन्य महाशय ने भी निवेदन किया। भगवन्! उपासना में चंचल चित्त को टिकाने के लिए किसी योग-क्रिया का उपेदश दीजिए।

स्वामी जी ने पहले वाले भाव से ही शिक्षा दी कि एक विवाह और कर लो, फिर चित्त आप ही स्थिर हो जाएगा। यह उत्तर सुनकर, वह व्यक्ति अति लज्जित और विस्मित हुआ। लज्जा तो उसे इसलिए आई कि एक स्त्री के जीते जी उसने दूसरा विवाह कर लिया था, और आश्चर्य इसलिए हुआ कि बिना बताए, महाराज को इसका ज्ञान हुआ तो कैसे हुआ?

6.यह घटना सन 1872 की है। स्वामी जी सायंकाल 8 बजे पटना से चलकर गाड़ी से रात के बारह बजे जमालपुर जंक्शन पर पहुँचे। उस समय मुंगेर को जाने वाली गाड़ी के छूटने में एक घण्टा शेष था। स्वामी जी पटना की गाड़ी से उतर कर वहीं जमालपुर स्टेशन के आँगन में टहलने लग गए। उस समय वहाँ एक अंग्रेज इंजीनियर पत्नी सहित खड़ा था। उस इंजीनियर की पत्नी ने कौपीनमात्र धारी एक परमहंस को अपने सामने घूमता देखकर बुरा माना। इंजीनियर महाशय ने तुरन्त

जाकर स्टेशन मास्टर से कहा, "यह कौन नंगा टहल रहा है? इसे इधर-उधर घूमने से बन्द कर दो।" स्टेशन मास्टर ने महाराज को अति विनीत भाव से कहा, "भगवन! दूसरी ओर चलकर कुर्सी पर आराम कीजिए। मुंगेर की गाड़ी के जाने में अभी बड़ी देर है।

स्वामी जी पहले ही सब कुछ समझ गए थे। इसलिए उन्होंने स्टेशन मास्टर से कहा, जिस महाशय ने मुझे हटा देने के लिए आपको यहाँ भेजा है, उसे जाकर कह दीजिए कि हम उस युग के मनुष्य हैं, जिस युग में बाबा आदम और माता हव्वा, अदन उद्यान में, नग्न घूमने में किंचित् भी लज्जा न करते थे। महाराज ने टहलना पहले की भाँति ही जारी रखा। इंजीनियर ने स्टेशन मास्टर को पुनः बुलाकर अपना आदेश दुहराया। इस पर स्टेशन मास्टर ने कहा कि महाशय! यह कोई साधारण व्यक्ति नहीं है, जिसे मैं आँगन से निकाल दूँ। यह तो हम और आप जैसों को कुछ भी न समझने वाला एक स्वतंत्र संन्यासी है। तब इंजीनियर ने स्वामी जी का श्री नाम पूछा। इस पर स्टेशन मास्टर ने कहा कि इनका नाम दयानन्द सरस्वती है। इंजीनियर महाशय यह कहता हुआ कि क्या ये प्रसिद्ध सुधारक स्वामी दयानन्द सरस्वती हैं, तत्काल उठ खड़ा हुआ और स्वामीजी के समीप जाकर उसने विनीत भाव से नमस्कार किया और कहा "चिरकाल में मेरे चित्त में आपके दर्शनों की अभिलाषा थी। यह मेरा सौभाग्य है कि यहाँ आपके दर्शन हो गए हैं।

इस लेख में स्वामी जी ने वैदिक संस्कृति को ध्यान में रखते हुए आदम और हव्वा को बाबा आदम और माता हव्वा कहकर सम्बोधित किया है। बाकी हर स्थान पर आपको आदम और हव्वा ही पढ़ने को मिलेगा। यह हमारी ही एक वैदिक संस्कृति है जो दूसरों मतों के महान् व्यक्तियों को भी सम्मानित शब्दों में सम्बोधित करना सिखाती है।

180, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता-7

इतिहास के स्वरूप-विषयक भारतीय दृष्टि

-स्व. स्वामी वेदमुनि परिव्राजक

सन् 1975 में कुछ तथाकथित इतिहासज्ञों ने 'महाभारत हुआ कि नहीं, महाभारत हुआ तो था किन्तु रामायण से पहले, न कभी गाण्डीव रहा न पिनाक' ये तीन वक्तव्य देकर अपनी भारतीय इतिहास विषयक अज्ञानता का परिचय दिया था। उस समय हमने 'रामायण, महाभारत और लंका, रामायण इतिहास है कपोल कल्पना नहीं, गाण्डीव भी था और पिनाक भी, रामायण पहले महाभारत बाद में' ये चार लेख विविध समाचार पत्रों में लिखे थे। अनेक दैनिक, साप्ताहिक और मासिक पत्रों में हमारे ये लेख प्रकाशित हुए थे। इतिहास किसे कहते हैं? इन पंक्तियों में हम इस विषय पर लिखने लगे हैं।

मैकाले की योजना की शिक्षा से शिक्षित कहलाने वाले इन तथाकथित इतिहासज्ञों को यह पता है कि मैकाले ने यह शिक्षा योजना इसलिए भारत में प्रचलित कराई थी कि इससे शिक्षित होकर भारतीय केवल रक्त, रंग और नाम से ही भारतीय रह जायें किन्तु आचार-विचार से एकदम अभारतीय तथा अंग्रेजी सभ्यता के पुजारी बन जायें। यह जानकर भी उसी पद्धति को कार्यान्वित करने के लिए अंग्रेजों द्वारा तैयार किये गये कल्पित-मिथ्या इतिहास को स्वाधीनता के सत्तर वर्ष बीत जाने पर आज भी प्रमाण मानते रहना बुद्धिमानी नहीं कही जा सकती। खेद की बात तो यह है कि विदेशियों और उनका अन्धानुकरण करने वाले भारतीय लेखकों के लेखों से इधर-उधर हटकर खोज करना तो एक ओर रहा, ये लोग साधारण तर्कों से भी काम लेने को तैयार नहीं। उन तर्कों से भी जो इनके अपने विचारों, मान्यताओं और धारणाओं के विषय में उत्पन्न होते हैं। तर्कों से उत्पन्न होने पर उन तर्कयुक्त प्रश्नों के युक्तियुक्त तथा प्रामाणिक उत्तर ढूँढना ही अनुसन्धान कहलाता है। जो व्यक्ति इस प्रकार से अनुसन्धान के लिए तैयार न हो, वह वास्तविकता को कदापि नहीं जान

सकता और बिना वास्तविकता को जाने इतिहासवेत्ता होने का विचार रखना नितान्त खोखला दम्भ मात्र है। ऐसे व्यक्तियों द्वारा इतिहास विषयक वक्तव्य देना अनधिकार प्रयत्न तथा जाति को दिग्भ्रान्त करने का पाप है।

उन दिनों जब इन तथाकथित इतिहास-वेत्ताओं के वक्तव्य भारत में प्रमुख समाचार-पत्रों में प्रकाशित हो रहे थे, तब अनेक स्थानों पर "रामायण और महाभारत ऐतिहासिक ग्रन्थ हैं अथवा नहीं" इस विषय पर गोष्ठियाँ और सम्मेलन आयोजित किये गये, परन्तु इन गोष्ठियों और सम्मेलनों के आयोजकों के मन-मस्तिष्कों पर भी मैकाले की शिक्षा का ही प्रभाव है, परिणामस्वरूप ही पी.एच.डी. और इतिहास के कॉलिज प्रवक्ता ही बुलाये जाते रहे। ये बेचारे क्या कहते? या तो वह पक्ष लेते प्राध्यापकों द्वारा प्रतिपादित भारतीय इतिहास विषयक भ्रान्तियों का और या अपने आयोजकों की भावनाओं की ओर ध्यान देते तो यह कह देते कि 'अभी भारतीय इतिहास पर और खोज की आवश्यकता है। इस विषय में और अधिक जानकारी किये बिना कुछ कहना उचित नहीं'। इसका अर्थ यह हुआ कि "खुश रहे शेख भी, शैतान भी बेज़ार न हो।" यह सामान्य बात है। जब किसी विषय की जानकारी न हो, तब किसी भी पक्ष और वह भी विशेषकर कार्यक्रम के आयोजकों को रुष्ट करना अभिप्रेत न हो तो इस प्रकार का निर्णय अथवा वक्तव्य से एक ही परिणाम निकलता है कि आयोजन निरर्थक और निष्फल रहा है, चाहे मन में विरोधी और कपटपूर्णभावना रखते हुए आयोजकों से बुरा न बनने के लिए ऐसा वक्तव्य दिया गया हो अथवा अपनी अज्ञानता और अयोग्यता को छिपाने के लिए।

इन आयोजनों में भारतीय इतिहास की जानकारी रखने वालों को नहीं बुलया गया। बुलाना तो एक ओर रहा इन लोगों से सम्पर्क कर यह जानने का प्रयत्न भी नहीं किया गया कि इस विषय पर आप कोई जानकारी दे सकेंगे क्या? अथवा इस

विषय में आप कुछ कहने की इच्छा रखते हैं क्या?

भारतीय इतिहास को यूरोपीय लोगों, विशेषकर ब्रिटेन निवासियों ने क्यों विकृत किया? इस विषय में इतिहास विषयक सुप्रसिद्ध अनुसन्धानकर्ता तथा भाषा का इतिहास, वैदिक वाङ्मय का इतिहास और भारतवर्ष का बृहद इतिहास आदि अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों के रचयिता स्वर्गीय श्री पं. भगवतदत्त जी के विचार पाठकों की जानकारी के लिए हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं तथा इसके पश्चात् इतिहास किसे कहते हैं? इतद्विषयक विवेचन प्रस्तुत करेंगे।

"रॉथ, ह्विटने, वेबर, मैक्समूलर, मैक्डानल, कीथ और रैपंसन आदि पाश्चात्य लेखकों को यह महान भय था कि यदि एक बार भी आर्य इतिहास सत्य स्वीकृत हो गया तो तौरेत, जबूर और इंजील का मत-जो वर्तमान यहूदी और ईसाइयों ने समझ रखा है- संसार से उठ जायेगा। संसार वेदों की ओर झुकेगा, भारतीय गौरव पराकाष्ठा को प्राप्त होगा और संसार भारत का अभूतपूर्व मान करने लगेगा। मनु आदि ऋषि सर्वोपरि माने जायेंगे, कथित आसुरी और पंचशिखा आदि सांख्य-प्रवक्ता, हिरण्यगर्भ आदि योग्य-वक्ता, स्कन्द, इन्द्र, विष्णु, भरत चक्रवर्ती, मान्धाता, हैहय अर्जुन, जामदग्न्य राम और पार्थ अर्जुन आदि अतिमहारथ महासेनापति वर्तमान ऐतिहासिकों के हृदय में उज्ज्वलता प्राप्त करेंगे। संसार का अद्वितीय पुरुष श्रीकृष्ण-जिसके पश्चात् उससे शतांश दिव्य-गुण रखने वाला एक पुरुष भी आज तक भूतल पर नहीं जन्मा-संसार का हृदय-सम्राट होगा। अतः इन जर्मन और अंग्रेज आदि लेखकों ने इतिहास-पुराण ग्रन्थों का महा निरादर किया। वैदिक ग्रन्थों से वे साक्षात् रूप में परे नहीं हट सके, पर उन्हें अधिकांश मिथ्या कल्पनायें कहकर उन्होंने परे फेंक दिया और इतिहास आदि को उन्होंने वैदिक ग्रन्थों के विपरीत बताकर अपनी कपोल-कल्पना आरम्भ की।"

इन विचारों को व्यक्त करने वाले स्वनामधन्य श्री पं.

भगवददत्त जी ने भारतीय इतिहास विषयक अपनी खोज प्रस्तुत करते हुए घोषणा की है कि "यूरोप के लेखकों को ज्ञान हो जाना चाहिए कि उनकी कल्पनायें अब भारत में मान्य नहीं होंगी। उन्हें शिष्य बनकर भारतीय विद्वानों से पढ़ना होगा और अपने उच्छृंखल तथा कल्पित भाषा-मतों को तर्कयुक्त बनाना होगा। उन्हें ईसाई पक्षपात छोड़कर सत्य की आराधना करनी होगी।"

इतिहास किसे कहते हैं? इस विषय को पाठकगण नीचे की पंक्तियों में पढ़ें और तब निश्चय करें कि ये लोग कितने इतिहासवेत्ता हैं, जो आजकल इतिहास के अधिकृत विद्वान और प्रवक्ता होने का दम भरते हैं।

'इतिहासः पुरावृत्तं ऋषिभिः परिकीर्त्यते।'

आचार्य शौनक कृत बृहददेवता। 4/46। इतिहास अर्थात पुरावृत्त (पुराना वृत्तान्त) ऋषियों द्वारा वर्णित है।

'इतिहैवमासीदिति यः कथ्यते स इतिहासः।'

आचार्य दुर्ग कृत निरुक्त भाष्यवृत्ति 2/90। निश्चयपूर्वक इस प्रकार हुआ था, ऐसा जो कहा जाता है, वह इतिहास है।

'इतिहासः पुरावृत्तं।' अमरकोष नामलिंगानुशासनम्। 9/6/4। इतिहास प्राचीन वृत्तान्त को कहते हैं।

'इति ह शब्दः पारम्पर्योपदेशेव्ययम्। इति हास्तेऽस्मिन्नितिहासः।' परम्परा से जो कहा जा रहा है कि ऐसा हुआ था, वह अव्यय है अर्थात् उसमें परिवर्तन योग्य कुछ भी नहीं है, इसीलिए वह इतिहास है।

इदं श्रृणु महाप्राज्ञ धर्मपुत्र महायशः।
इतिहासं पुरावृत्तं शरणार्थं महाफलम्।।

इस श्लोक की द्वितीय पंक्ति में इतिहास को पुरावृत्त (प्राचीन वृत्तान्त) कहा गया है।

प्राग्वृत्तकथनं चैकराज्यकृत्यमिवादितः यस्मिन् स इतिहासः स्यात् पुरावृत्तः स एव हि। शुक्रनीतिसार 4/3/102, 103।

प्राचीन कथन जिसमें एक राजा का कृत्य वर्णित है, इतिहास

ही है, क्योंकि उसमें निश्चित प्राचीन वर्णन है।

पुराणम्–इतिवृत्तम्–आख्यायिका–उदाहरणं
–धर्मशास्त्रं अर्थशास्त्रं चेति इतिहासः।

पुराण, इतिवृत्त, आख्यायिका, उदाहरण, धर्मशास्त्रं, अर्थशास्त्र ये छः इतिहास हैं।

अत्रापि उदाहरन्ति इमं इतिहासं पुरातनम्।

महाभारत शान्ति पर्व।

इस उद्धरण में इतिहास और पुरातन शब्द के साथ-साथ 'उदाहरन्ति' अर्थात् उदाहरण देते हैं।

धर्मार्थकाममोक्षाणामुपदेशसमन्वितम्।
पुरावृत्त कथायुक्तमितिहासं प्रचक्षते।

विष्णुपुराण की श्रीधर स्वामीकृत टीका 3/4/10

आर्षादि बहुधाख्यानं देवर्षिचरिताश्रयम्।
इतिहासमिति प्रोक्तं भविष्यादभुत धर्मयुक।। टीका 3/4/90।

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के उपेदश से समन्वित तथा प्राचीन कथा से युक्त इतिहास कहा जाता है। आर्ष, देव और ऋषियों के चरित्र का आश्रय लिये हुए जो बहुत से आख्यान (वर्णन) हैं, वह इतिहास हैं, ऐसा कहा गया है कि वह भविष्य को अद्‌भुत धर्म से युक्त करने वाला है।

ऐतिह्य शब्देनेतिहासपुराणं गृह्यते।

ऐतिह्य शब्द से इतिहास पुराण का ग्रहण होता है। प्रिय पाठकगण! जो व्यक्ति इतिहास की इन परिभाषाओं, व्याख्याओं और लक्षणों से अपरिचित हैं, वे भारतीय इतिहास विषय में प्रामाणिक विद्वान नही कहला सकते तथा ऐसे व्यक्तियों द्वारा भारतीय इतिहास के विषय में कुछ कहना कोई महत्त्व नहीं रखता। भारतीय इतिहास की वास्तविक जानकारी उसी व्यक्ति को हो सकती है जिसने इतिहासविषयक उपर्युक्त विवेचना को पढ़ा हो।

वैदिक संस्थान, नजीबाबाद, उ०प्र०

खतरे में देश की अखण्डता

-शिवकुमार गोयल

असम में हिंसा पर उतारू बंगलादेश मुस्लिम घुसपैठियों का कहर अभी भी जारी है और वोटों के सौदागर सेकुलर राजनेता इन सामूहिक नृशंस हत्याओं पर घड़ियाली आँसू बहा रहे हैं। सभी जानते हैं कि पहले पूर्वी पाकिस्तान और बाद में बंगलादेश की सुनियोजित ढंग से घुसपैठ ने असम को मुस्लिम बहुल बनाने की नीति को साकार करने में काफी हद तक सफलता प्राप्त कर ली है। असम में अब 40 से ज्यादा विधानसभा क्षेत्र मुस्लिमबहुल बना दिए, गए हैं। यहाँ घुसपैठिये अपना विधायक चुनकर लोकतन्त्र को खुली चुनौती देते हैं। पाकिस्तान व बंग्लादेश से प्रेरित मुस्लिम युनाइटेड लिबरेशन टाइगर्स ऑफ असम (मुल्टा) काफी समय से हिन्दू युवतियों को प्रेमजाल में फँसाने और फिर उनका जबरन मतान्तरण कराने के दुष्कृत्य में संलग्न हैं। अधिकांश गाँवों में बोड़ो हिन्दुओं को आतंकित कर खदेड़ने में भी इन मुस्लिम घुसपैठियों ने सफलता प्राप्त की है। 10 अप्रैल, 1992 को असम विधानसभा में तत्कालीन मुख्यमंत्री हितेश्वर सैकिया ने स्वीकार किया था कि 1981 के बाद असम में 35 लाख बंगलादेशी घुसपैठिये प्रवेश कर चुके हैं। पश्चिम बंगाल में भी तब 44 लाख घुसपैठियों ने अवैध घुसपैठ करने में सफलता पाई थी। सेकुलर राजनीतिक दलों और उनके नेताओं में वोट बैंक बढ़ाने के लालच में इन घुसपैठियों के राशन कार्ड बनवाने तथा मतदाता सूची में उनके नाम दर्ज कराने की होड़-सी लगी रहती है। 1992 से लेकर अब तक इन घुसपैठियों की संख्या में कई गुना वृद्धि हो जाने की सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता। मुस्लिम कट्टरवादियों द्वारा सुलगाई गई आग में अब असम जल रहा है और राज्य तथा केन्द्र की सरकारें हिंसा के इस नग्न तांडव की भी अनदेखी कर असम की आग में राजनीतिक रोटियाँ सेंकने की कोशिश कर रही हैं।

मुस्लिम लीग का षड्यन्त्र

वस्तुतः असम को मुस्लिमबहुल बनाने का षड्यन्त्र अविभाजित भारत में सन 1971 में बंगाल और असम के मुस्लिम लीग के मन्त्रिमंडल ने रचा था। असम के तत्कालीन मुख्यमंत्री मिया सादुल्ला खाँ ने घोषणा की थी कि असम में खाली जमीन पड़ी है, उस पर खेती के लिए बंगाल से जो भी मुस्लिम आकर यहाँ बसना चाहें, उन्हें मुफ्त में जमीन दी जाएगी। लार्ड वेवल ने अपनी डायरी में लिखा, 'सादुल्ला खाँ का यह आह्वान अधिक अन्न उत्पादन की आड़ में असम को मुस्लिम बहुल बनाने के लिए था।' उधर शुरु में ब्रिटिश सरकार ने बोड़ो हिन्दुओं की गरीबी का लाभ उठाकर उन्हें ईसाई बनाया, बाद में मुस्लिम लीग ने उन्हें मुसलमान बनाने के लिए कुटिल योजना बनाई। 1944 में काँग्रेसी नेता गोपीनाथ बारदोलोई के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने पंचगनी जाकर गाँधीजी को सूचना दी थी कि असम को मुस्लिमबहुल बनाने के लिए मुस्लिम लीग हर तरह के हथकंडे अपना रही है। उस समय 'हरिजन सेवक' में लिखे अपने लेख में गाँधी जी ने इस षडयन्त्र पर चिन्ता व्यक्त की थी। मुस्लिम लीग ने भारत विभाजन के दौरान असम व बंगाल को मुस्लिमबहुल बताकर पाकिस्तान में शामिल किए जाने की माँग की थी। तब हिन्दू महासभा नेता डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने इसका विरोध करते हुए अधिकांश भाग भी हिन्दूबहुल है।' भारत विभाजन के दौरान असम के सिलहट जिले को मुस्लिमबहुल मानकर पाकिस्तान में मिला दिया गया था, किन्तु शेष असम हिन्दू बहुल होने के कारण भारत में रहा।

जिन्ना की प्रमुख भूमिका

मोहम्मद अली जिन्ना ने भी उस समय लिखे एक लेख में कहा था 'यदि मुस्लिम लीग के नेता कुछ साल पहले से इस दिशा में प्रयास करते तो पूरे असम को मुस्लिमबहुल बनाया जा सकता था। अब भी अगले कुछ वर्षों में हम पूरे असम को मुस्लिमबहुल बना सकते हैं।' फजलुल हक, सुहरावर्दी तथा मौलाना मसानी ने पूर्वी पाकिस्तान के मुसलमानों को असम व

बिहार में घुसपैठ कर बसने की अपील की थी जिससे इन्हें मुस्लिमबहुल क्षेत्र बनाया जा सके।

जुल्फिकार अली भुट्टो ने 'दि मिथ आफ इंडिपेंडेंस पुस्तक में साफ लिखा था, 'पाकिस्तान के लिए केवल कश्मीर ही नहीं, असम भी महत्त्वपूर्ण है। जब तक असम हमें नहीं मिलेगा हम चैन से नहीं बैठेंगे। सूचना और प्रसारण मंत्रालय के विज्ञापन और प्रचार विभाग द्वारा 1963 में प्रसारित एक लेख में कहा गया था, 'सरकार के पास पूरे प्रमाण है कि किस प्रकार पूर्वी पाकिस्तान से सीमा पार कराकर असम में अवैध प्रवेश कराया जाता है। इन घुसपैठियों ने सीधे-सादे असमी किसानों की जमीन जायदाद हथियाई है। यहाँ तक कि वे 'भूमिकर' देकर उस जमीन के मालिकाना हक का दावा करने लगे हैं। स्थानीय अधिकारियों से साँठगाँठ करके उन्होंने सम्पत्ति पंजीकरण प्रमाण-पत्र प्राप्त कर लिए हैं। राजनीतिक दलों ने वोटों के लालच में इन घुसपैठियों ने नाम मतदाता सूचियों में चढ़वाने शुरु कर दिए हैं। 'सितम्बर 1975 में चुनाव अधिकारियों की एक बैठक में तत्कालीन चुनाव आयुक्त श्री श्यामलाल शकधर ने स्वीकार किया था, 'असम के राजनीतिक दलों के नेताओं ने ऐसे असंख्य लोगों के नाम मतदाता सूचियों में दर्ज करवा दिए हैं जो भारत के नागरिक नहीं हैं।

चुनाव आयोग को ऐसे नाम तलाश कर सूची से हटाने चाहिए। लेकिन चुनाव आयोग ने प्रयास किया तो 'सेकुलर राजनीतिक दलों के नेता नाम न हटाए जाने पर अड़ गए। 1980 में लोकसभा के मध्यावधि चुनाव की घोषणा होते ही अखिल असम छात्र संघ (आसू) तथा असम गण परिषद (अगप) ने आन्दोलन चलाकर मतदाता सूचियों में से बंगलादेशी नागरिकों के नाम हटाए जाने की माँग की। एक राष्ट्रवादी नेता ने तर्क दिया था कि यदि एक विदेशी घुसपैठिया चुनाव लड़कर सांसद बन गया तो क्या यह हमारे देश के लिए कलंक की बात नहीं होगी?

घुसपैठियों को संरक्षण

असम विधानसभा या लोकसभा चुनावों से पूर्व हर बार

घुसपैठियों के नाम काटे जाने के लिए फार्मूले बनाए गए, किन्तु सेकुलर राजनीतिक दल घुसपैठियों को निकाले जाने का खुलकर विरोध करते रहे। बदरूद्दीन अजमल ने तो घुसपैठियों को निकाले जाने का खुलेआम विरोध किया था। इस घातक कुटिल नीति के परिणामस्वरूप असम में निरन्तर बंगलादेशी मुसलमान घुसपैठ करते रहे। उन्होंने स्थानीय हिन्दू किसानों की जमीनों का कब्जा करने में सफलता प्राप्त कर ली। इतना ही नहीं, बंगलादेशी घुसपैठियों ने सुनियोजित ढंग से असम से बाहर राजधानी दिल्ली तथा आसपास के क्षेत्रों यहाँ तक देश के विभिन्न भागों तक पहुँचकर वहाँ भी ठिकाने बना लिए हैं, जिनकी संख्या करीब 4 करोड़ आँकी जाती है। इनमें से अधिकांश आतंकवाद व अलगाववाद की घटनाओं में शामिल होने लगे। चोरी, लूट-पाट व हत्या आदि अपराधों व तस्करी में भी बंगलादेशी मुसलमान लिप्त पाए गए हैं।

असम की इस वर्तमान विकराल समस्या के लिए वास्तव में केवल वे सेकुलर दल दोषी हैं जो वोटों व सत्ता के लिए राष्ट्र की एकता व अखण्डता की उपेक्षा करके बंगलादेशी घुसपैठियों का पालन-पोषण कर उन्हें असम में बसे रहने के लिए बेशर्मी से सक्रिय रहते हैं। तुष्टिकरण की यह नीति अत्यन्त शर्मनाक है।

आतंकवाद का बढ़ता दायरा

उधर कश्मीर घाटी को योजनापूर्वक पाकिस्तानी आतंकवादियों का चरागाह बना दिया गया है। किसी आतंकवादी के मारे जाने पर उसे बेकसूर बताकर पाकिस्तान से प्रेरित तत्त्व सड़कों पर उतर कर सुरक्षा बलों के विरुद्ध प्रदर्शन करने लगते हैं। पूर्व मुख्यमन्त्री उमर अब्दुल्ला अन्य अलगाववादियों के स्वर में स्वर मिलाकर कश्मीर घाटी से सेना हटाने की माँग कर पाकिस्तान की कुटिल नीति को ही साकार करने का मार्ग प्रशस्त करने में लगे हैं। कश्मीरी वार्ताकारों ने जो रपट प्रस्तुत की है उसका गम्भीरता से अध्ययन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि वह कश्मीर को पाकिस्तान में मिलाने के पाकिस्तानी एजेंडे का ही एक भाग है। इसमें से कई वार्ताकारों

के चेहरे बेनकाब हो चुके हैं, क्योंकि वे पाकिस्तान के पक्ष में अन्तर्राष्ट्रीय मानस बनाने के लिए विदेशों में होने वाली गोष्ठियों में सक्रिय रहे हैं।

असम, त्रिपुरा, कश्मीर तथा अन्य क्षेत्रों में पनप रहे इस आतंकवाद का, एकमात्र कारण वोटों के लिए मुस्लिम-तुष्टीकरण की नीति ही है। किसी भी तरह वोट बैंक बढ़ाकर सत्ता पर कब्जा करने की नीयत रखने वाले सेकुलर दलों में होड़ लगी हुई है कि राष्ट्रद्रोहियों, अलगाववादियों को, आतंकवाद को संरक्षण देने वालों को किस प्रकार सन्तुष्ट कर चुनावों में उनके वोट झटके जाएँ। इसी स्वार्थ को पूरा करने की रणनीति के अन्तर्गत समय-समय पर हिन्दू आतंकवाद का झूठा षड्यन्त्र रचकर निर्दोष साधु-साध्वियों को झूठे मामलों में फँसाकर मुस्लिमों को अपने पक्ष में करने की घातक नीति अपनाने में भी संकोच नहीं किया जाता।

आचार्य कृपलानी की चेतावनी

स्वाधीनता से पूर्व कांग्रेस के अनेक वरिष्ठ नेता समय-समय पर यह चेतावनी देते रहे हैं कि यदि जिन्ना व मुस्लिम लीग के समक्ष कांग्रेस निरन्तर झुककर उनकी राष्ट्रघाती माँग मानती रही तो एक दिन देश के विभाजन का दंश झेलना पड़ेगा। महामना मालवीय जी, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन आदि ने कई बार यह चेतावनी दी थी। आचार्य कृपलानी ने 22 नवम्बर, 1963 को मेरठ में कांग्रेस के 54 वें अधिवेशन में अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए कहा था, 'मैं पहले भी कह चुका हूँ कि कांग्रेस को अल्संख्यकों की उचित माँगों को स्वीकार करना चाहिए, पर देश का अहित करके नहीं। आज की अनेक कठिनाइयाँ पिछले दिनों गलत माँगें मानने से हुई हैं। यदि हमने पृथक निर्वाचन का गणतन्त्र विरोधी सिद्धान्त मानने से इन्कार कर दिया होता तो वर्तमान उपद्रव नहीं होते। आज भी यदि हम दवाब में आकर राष्ट्रीयता की जड़ें काटने वाले सिद्धान्त मान लें तो भले ही उपद्रव बन्द हो जाएँ, पर वह देश के साथ विश्वासघात होगा' आचार्य कृपलानी कुछ ही दिन पूर्व पूर्वी बंगाल में हिन्दुओं के

नरसंहार की घटनाओं का अवलोकन कर लौटे थे। उन्होंने कांग्रेस के अध्यक्षीय भाषण में कहा, 'मैं अभी बंगाल, बिहार से लौटा हूँ। 'लड़ के लेंगे पाकिस्तान' और 'मर के लेंगे पाकिस्तान' का नारा लगाने वालो ने बंगाल में अपनी करनी खूब दिखाई है। ये लोग आग से खेल रहे थे। अहिंसक होते हुए भी मैं नहीं कह सकता कि उस अत्याचार के सामने यदि मैं होता तो मुझ पर क्या प्रतिक्रिया होती? इन उपद्रवियों ने मानवता को कलंकित किया है।'

राजर्षि टंडन की वेदना

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन आचार्य कृपलानी के साथ नोआखली आदि उपद्रवग्रस्त क्षेत्रों में गए थे। श्री टंडन ने अपनी रपट में लिखा 'बंगाल को नोआखली ने कलंकित ही कर दिया। नोआखली आदि में जो कुछ हुआ है उसकी तुलना हीनतम नाजियों की क्रूरताओं के साथ ही हो सकती है। गुंडों के गिरोहों ने लोगों के जान-माल की होली जलाई है। इसे आचार्य कृपलानी, श्रीमती सुचेता कृपलानी, श्री शरत बोस तथा मैंने देखा है। हम कलकत्ता हवाई जहाज से पहुँचे तो अनेक नर-नारियों की आँखों में करुणा के आँसू थे। ज्यों ही हम शरत बाबू के घर पहुँचे लोगों ने हमें घेर लिया। भयावह कथानक सुनाने वालों का ताँता लग गया।' राजर्षि टंडन आगे लिखते हैं, 'सायं को कोमिला पहुँचे तो लोगों ने हमें घेर कर पूछा 'कांग्रेस हमारे लिए क्या कर रही है।' नोआखली में बताया गया, एक हिन्दू जान बचाने के लिए पेड़ पर चढ़ गया, भूखा-प्यासा लटका रहा। थक कर गिरा, बेहोश पड़ा था। हत्यारे पहुँचे, ताकि उसे जीवन बचाने की सजा दी जाए। उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए।'

टंडन जी ने आगे लिखा, 'एक पीड़ित ने हमें बताया, 'हम रक्षा के लिए चिल्लाए। परन्तु पुलिस की जगह लुटेरों, गुंडों के झुण्ड आ पहुँचे। उन्होंने बहनों के साथ भाइयों के सामने बलात्कार किया, पुत्रों के सामने माताओं को नंगा किया गया। उन्हें जमीन पर लिटाकर बाद में हलाल किया गया। फिर हाथों को खून से रंगकर उनकी महिलाओं के मुँह पर पोता गया।

तत्पश्चात् उनके साथ बलात्कार किया गया। यह सब मुस्लिम लीग को तुष्ट करने की आत्मघाती नीति का दुष्परिणाम भारत विभाजन के साथ-साथ लाखों हिन्दुओं के संहार के रूप में देश को भोगना पड़ा।

डॉ. लोहिया की चेतावनी

कांग्रेस के अन्य अनेक नेताओं ने भी चेतावनी दी थी कि भारत विभाजन से हिन्दू-मुस्लिम समस्या का स्थायी निदान कदापि नहीं होगा। समाजवादी नेता डॉ. राम मनोहर लोहिया की तो स्पष्ट चेतावनी थी कि भारत विभाजन के गुनाहगार कांग्रेसी नेता यदि सत्ता प्राप्ति के लिए अलगाववादियों को तुष्ट करने की घातक नीति का अनुसरण करते रहे तो पूरा देश एक दिन फिर अलगाववाद की गिरफ्त में आ जाएगा। आज उन महापुरुषों की भविष्यवाणी अक्षरशः सत्य सिद्ध हो रही है तथा पूरा देश आज अलगाववाद, आतंकवाद से घिर चुका है तथा हमारे देश के एक और विभाजन की साजिश सुनियोजित ढंग से रची जा रही है।

चीन-पाकिस्तान की दुरभिसन्धि

आज चीन-पाकिस्तान के साथ साठगाँठ करके हमारे देश की अखण्डता के लिए खुली चुनौती दे रहा है और हम इस भीषण खतरे को अनदेखा करते जा रहे हैं। चीन की पीपुल्स लिबरेशन आर्मी चाहे जब हमारी सीमा में घुसपैठ कर हमें आँखें दिखाने लगती है। चीन समय-समय पर भारत के राज्य अरुणाचल प्रदेश को चीन का हिस्सा बताता है तो हम विरोधपत्र भेजने के अलावा कोई ठोस कार्रवाई नहीं करते हैं। वह समय-समय पर झूठा आरोप लगाता है कि भारत ने सिक्किम व अरुणाचल क्षेत्र में चीन की 20 हजार वर्ग किलोमीटर भूमि दबाई हुई है। वह जम्मू-कश्मीर प्रदेश को मानचित्र पर पाकिस्तान का अंग दिखाकर हमें उत्तेजित करने का प्रयास करता रहता है। पाकिस्तान द्वारा हमारे जिस कश्मीर के भू-भाग पर कब्जा किया हुआ है, उस स्कार्दू क्षेत्र में कराकोरम राजमार्ग के आसपास चीनी सैनिक अपने अड्डे बना चुके हैं। चीन पाकिस्तान तक अपनी सड़क बना चुका है जो

हमारे देश की सुरक्षा के लिए खतरा सिद्ध हो सकती है। नवम्बर 2001 में लद्दाख में केन्द्र द्वारा प्रायोजित नरेगा योजना के अन्तर्गत बनाई जा रही सड़क के निर्माण में चीन ने न केवल व्यवधान डाला अपितु उसने नियन्त्रण रेखा के अंदर पहुँचकर 54 किलोमीटर लम्बी अपनी सड़क बना डाली। समय-समय पर चीन और पाकिस्तान भारत में सक्रिय आतंकवादी घटनाओं और बम विस्फोटों का प्रशिक्षण देते हैं, यह अब किसी से छिपा नहीं है।

चीन के प्रति दुर्बल नीति का दुष्परिणाम

पं. नेहरु की चीन के प्रति दुर्बल नीति से ही चीन का दुःसाहस निरन्तर बढ़ता रहा। तिब्बत 'बफर स्टेट' के रूप में हमारे देश की सुरक्षा के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण था। नेहरु जी ने मनमाने ढंग से 1951 में तिब्बत को एक तरह से चाँदी की तश्तरी में रखकर चीन को उपहार में भेंट कर दिया। चीन ने कुछ ही समय बाद 1955 में भारत की सीमा में अतिक्रमण शुरु कर हमें आँखें दिखानी शुरु कर दी थीं। सीमा विवाद के हल के लिए चाऊ एन लाई को भारत आमन्त्रित किया गया तो राजधानी दिल्ली को 'हिन्दी-चीनी, भाई-भाई' के उद्घोषों से गुँजा दिया गया। चीन को तिब्बत उपहार में दिए जाने का समाजवादी नेता डॉ. राममनोहर लोहिया, आचार्य डॉ. रघुवीर तथा सुविख्यात राजनेता श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी ने डटकर विरोध किया था। डॉ. लोहिया ने तो 'तिब्बत बचाओ अभियान' भी चलाया था। अक्टूबर 1962 में चीन ने खुले रूप में हमारी उत्तरी सीमा पर आक्रमण किया तो पूरा देश उद्वेलित हो उठा था। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने उस समय कहा था, 'हमारे अत्यधिक विश्वास और असावधानी के कारण ही हमे चीन के इस आक्रमण के रूप में घोर संकट का सामना करना पड़ा है।'

डॉ. क. मा. मुंशी ने भवन जर्नल तथा भारती पत्रिका में 'कुलपति के पत्र' स्तम्भ में लिखा था, 'पंचशील और भाई-भाईवाद के जादुई प्रभाव में हम पण्डित नेहरु के शब्दों में, 'स्वयं अपने ही रचे एक अवास्तविक वातावरण में रहे',

विस्तारवादी चीन के साथ हम सनातन मैत्री की दुहाई देते रहे। चीन अजगर को सन्तुष्ट करने के लिए हम उसके द्वारा तिब्बत का निगल जाना भी शान्ति से देखते रहे।' श्री मुंशी आगे लिखते हैं, 'इस समय हमारी हजारों वर्ग मील भूमि चीन के कब्जे में है। आक्रांता को हटाने के लिए हमारे पास कोई निश्चित कार्यक्रम नहीं है। चीन के साथ हम कूटनीतिक व्यवहार अब भी इसी आशा में बनाए हुए हैं कि शायद यह अपना रवैया बदले। यह वैसा ही है जैसे नाग पंचमी के दिन साँपों को इस आशा से दूध पिलाना कि वे हमें काटेंगे नहीं।' चीन के 1962 के आक्रमण के दौरान कम्युनिस्टों के एक गुट ने चीनी सेना को 'मुक्ति सेना' बताते हुए कहा था, चीन ने भारत पर कोई आक्रमण नहीं किया। हिन्दू महासभा के प्रखर सांसद श्री विशनचन्द्र सेठ ने पं. नेहरु को पत्र लिखकर कम्युनिस्ट पार्टी को राष्ट्रद्रोही करार देने की माँग की थी। उन्होंने 13 नवम्बर 1962 को लोकसभा में भाषण में कहा था, 'यदि वीर सावरकर की रणनीति-राजनीति के हिन्दूकरण और हिन्दुओं के सैनिकीकरण' के सिद्धान्त को मान लिया गया होता तो चीन या पाकिस्तान कभी भी भारत पर आक्रमण का दुःस्साहस नहीं करते।' श्री सेठ ने निर्भीकता के साथ चीन के आक्रमण के लिए प्रधानमंत्री पं. नेहरु की ढुलमुल नीति को जिम्मेदार बताते हुए चेतावनी दी थी कि यदि यही नीति चलती रही तो भारत के एक और विभाजन की माँग उठेगी तथा हम मूकदर्शक बन सब कुछ सहन करते रहेंगे। महामना मालवीय, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, आचार्य कृपलानी, राजर्षि टंडन, डॉ. लोहिया, विशनचन्द्र सेठ सहित सभी राष्ट्रभक्त राजनेताओं की चेतावनियों की अनदेखी का ही परिणाम है आज का जलता, असम। पर दुर्भाग्य यह है कि इस आग की तपिश न सम्पूर्ण देशवासियों को उद्वेलित कर रही है और न ही सेकुलरों को अपनी नीतियों पर पुनर्विचार करने के लिए विवश कर रही है।

बीचपट्टी, पिलखुवा

VIVEKANAND : A UNIVERSAL TEACHER

-Satish Kapoor

Swami Vivekananda was a great reconciler of ideas, and provided a link between spirituality and science, tradition and modernity, material prosperity and spiritual ascension, and the spirit of enquiry and faith.

He combined Sanyasa with social work, Bhakti with Shakti devotion with strength, and partiotism with an international outlook. Besides, he reconciled the three different schools of Indian philosophy Dvaita, Vishishtadvaita and Advaita, describing them as different stages in one's spiritual development.

He wanted intellect to be balanced with love, mystical nature with reason, and practice with method. His words soothe and inspire, inform and educate, jolt one's complacency and deep-seated notions, or act, like the surgeon's knife, to dissect fears, prejudices or complexes from the subconscious mind.

Much can be learnt from Vivekananda in different spheres of life: psychologists can grasp that mind is refined matter, and the body concretised mind, and that the way to control the mind is to attian a higher state of consciousness. Physicists can learn that consciousness. is a fundamental reality; that there is no such think as strict causality, and that what we call matter, is in fact, potential energy. Mathematicians can understand the Vedantic view that space and time are a continuum. Chemists can know that the ultimate aim to discover one element, from which all others have been derived.

Neurobiologists can benefit from the dynamics of higher consciuousness, provided by him. Management experts can realise that the management of the Self must precede everything else, and that true motivation comes from within. Educationists can grasp that they cannot educate, but only help children to grow in terms of their nature. Students of Yoga can understand that this ancient science is not for building up a 'muscular body', but for Self-realisation. Besides, they need to remember that 'violent exercises are positively harmful.' Occulties can know that the display or misuse of extrasensory powers, deviates one from the spiritual path. Faith leaders can realise that nobody is less divine, and that if a religion cannot help one to find our God, it is useless.

Humanists may see in Vivekananda a modern Protagoras, who has asserted that 'No books, no scriptures, no science can ever imagine the glory of the self that appears as man.' Ratonalists can feel happy that Advaita Vedanta is a practical, scientific, secular, spiritual, and can help one to achieve higher goals.

Experts in Christology may appreciate Vivekananda's view that Jesus Christ was a sanyasin, whose vital message was that to renunciation, love and peace. His words that 'The Church tries of fit Christ into it, not the Church tries to fit Christ into it, not the Church into Christ', can be a point of self-examination for Christians. His optimism about the spread of gospel truths, is evident from his observation that 'In time to come, Christs will be in numbers like bunches of grapes on a vine', meaning thereby that, gradually all will attain to Christhood, which in the Advaitic sense means Selfhood.

The Supreme State

Vivekananda noted that each human being is like a bubble on the cosmic ocean, though a small one, in comparison with prophets or saints, who are bigger bubbles. But someday, all will merge into One, followed by the new creation which 'will bring new water to go through the process all over again', meaning that puissant souls will keep coming.

His observation that it is good to be born in a Church but bad to die there, was not sectarian, but a pointer to the fact that human beings normally adhere to forms and ceremonies throughout life, and fail to rise up in spirituality. They do not understand that Christ and Buddha are not names, but denote the Supreme state which they need to attain.

Vivekananda's ideas are so prolific that one can get tips on cooking, grinding spices, travel, music, fine arts, or the use of incense and flowers for good feeling. Despite material advancement, man is restless, tense and worried. Always in a hurry, in fulfilment of his worldly pursuits, he has forgotten his real Self, and become a victim of negative perceptions. It is in this context that Vivekananda's ideas become relevant.

Date of Pubn. : 28.2.2018 Posted at - NIE - H.O. Postal Date : 2-3 Mar. 2018
RNI Reg. No. DELBIL/2007/22062 Postal Regd. No. DL(W) 10/2143/2017-2019

हिरण्यपाणिमूतये सवितारमुपह्वये।
स चेत्ता देवता पदम्।। (यजु.22/10)

ऋषिः : मेघातिथि, देवता–सविता, छन्दः–गायत्री

हमें उस दिव्य चेतन स्वरूप परमात्मा की ही अपनी सुरक्षा और प्रेरणा के लिए उपासना करनी चाहिए। वही उपासना के योग्य है। वही ज्ञान और प्रकाश का प्रदाता है। उसे ही जानकर हम अपने अन्तिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं।

We should invoke the divine creator, God, none else for the protection and inspiration. He is worthy of adoration. He is the provider of light and knowledge. We have to realize this to reach ultimate destination, the Moksha.

Printed by - Friendsprintofast, New Delhi-58